



रशियन फेडरेशन में उत्तरी कॉकेशिया के ऊबड़-खाबड़ इलाकों में प्राचीन मीनारें अभी भी देखी जा सकती हैं, इंगश, चैंचन और वाइनैख लोगों द्वारा सदियों पहले शुरू की गई वास्तुकला परम्परा के मौन पहरेदार के रूप में। चार हजार सालों की अवधि में बनीं ये विशाल संरचनाएं आवास और रक्षा दोनों के लिए इस्तेमाल होती थीं। इस समय जो मीनारें बची हुई हैं, वो 13 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी के बीच बनाई गई थीं। अधिकतर इंगश मीनारें 6 से 12 मीटर के चौकोर 'बेस' पर बनी थीं जिनकी ऊँचाई 10 से 25 मीटर तक होती थी। इन मीनारों को बनाने के लिए, पत्थर के ब्लॉक्स को संभवतया चूना, चूना-मिट्टी या चूना-रेत मोर्टार से जोड़ा जाता था। मीनारों का निर्माण विस्तृत विधि-विधान के साथ सम्पन्न होता था, चाहे मीनार सुरक्षा के लिए हो या रिहाइश के लिए। जानवरों की बलि चढ़ाने के बाद, रिवाज के अनुसार, उनका खून नीचे के पत्थर पर लगाया जाता था और 'मास्टर बिल्डर' की भूमिका को स्रहते हुए गीत व लोककथाएँ रची जाती थीं। इंगश परंपरा के अनुसार, मीनारों का निर्माण एक वर्ष के अंदर पूरा हो जाना होता था, अन्यथा, न केवल परिवार को कमजोर बल्कि मीनार बनाने वाले कारीगर को अयोग्य समझा जाता था। मीनार ढहने के गंभीर परिणाम होते थे, मीनार के मालिकों की प्रतिष्ठा को दाग लगता था और मुख्य मिस्त्री को भविष्य के काम मिलना मुश्किल हो जाता था। मीनारें अक्सर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों, जैसे घाटी के प्रवेश, चौराहे या नदी के किनारों पर बनाई जाती थीं। मीनारों के लिए हिमस्खलन व भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं को झेल सकने वाले स्थानों को चुना जाता था। मीनारों के नैटवर्क की सहायता से पड़ोसी गांव, एक दूसरे पर लगातार निगरानी रखते। संकट के समय, मीनारों के बीच, संकेतों के माध्यम से सूचना का त्वरित आदान-प्रदान संभव होता था। आवासीय मीनारें दो से तीन मंजिला हुआ करती थीं। आवासीय मीनारों का भूतल, पशु धन को छाया देता था, जबकि दूसरी मंजिल पर लोग रहते थे। सबसे ऊपर वाली मंजिल पर खाने का सामान, कृषि औजार रखे जाते थे और किसी-किसी मीनार में तीसरी मंजिल पर बालकनी भी होती थी।

गंगानगर शहर बारिश से जलमग्न, बाढ़ जैसे हालात

चौदह घंटे में तीन बार भारी बारिश आने से शहर के चारों ओर पानी ही पानी हो गया

श्रीगंगानगर, 7 जुलाई (का.सं.)। गंगानगर इलाके में पिछले चौदह घंटे में तीन बार तेज बारिश आने से शहर में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। पानी निकासी नहीं होने के कारण बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं। घर से बाहर निकले लोग शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक आवाजाही के लिए बारिश में फंस गए। कई वाहन बंद हो गए तो कहीं पानी निकासी आफत बनी। ई रिक्शा का संचालन काफी कम देखने को मिला। बरसाली पानी से ई रिक्शा ज्यादा खराब होते हैं, ऐसे में चालकों ने आवाजाही से दूरियां बनाये रखीं। वहीं मजबूरी में निकले लोगों को जलमग्न हुई सड़कों को पार करने में अड़चन आई। पानी निकासी के इंतजाम रामभरोसे रहे। हालांकि पानी निकासी के लिए नगर परिषद की टीमों ने प्रयास किए हैं लेकिन धरातल पर नजर नहीं आए। इस बीच, जिला प्रशासन का दावा है कि, बारिश जिला मुख्यालय पर 82 एम.एम. बारिश, चूनाबढ़ में 54 एम.एम., मिर्जेवाला में 58 एम.एम. बारिश हुई है

■ गंगानगर शहर मुख्यालय पर 82 एम.एम. बारिश एवं चूनाबढ़ में 54 एम.एम. बारिश दर्ज की गई।

■ शहर में पानी की निकासी नहीं होने के कारण बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं, आवाजाही के लिए घर से बाहर निकले लोग बारिश और रास्तों पर पानी जमा होने के कारण घंटों बीच रास्ते में ही फंसे रहे।

जबकि सादुलशहर में 56 एम.एम. बारिश दर्ज की है। इसके अलावा सूरतगढ़, करणपुर, राजियासर में भी बरसात के समाचार है। जिला मुख्यालय पर रविवार को सुबह साढ़े छह बजे बरसात का दौर शुरू हो गया। करीब आठ बजे तक बरसी बारिश से शहर का अधिकांश एरिया जलमग्न हो गया। गौशाला मार्ग, मीरा मार्ग, सुखांडिया मार्ग, सूरतगढ़ मार्ग, पदमपुर रोड, रवीन्द्र पथ, गगन पथ, पुरानी आबादी के काफी इलाके पानी से पानी में नजर आए। इस बरसात से उमस भरी गर्मी से छुटकारा भले ही मिल गया हो लेकिन शहर के अधिकांश हिस्सों में

पानी भरवा हो गया है। इधर, ग्रामीण क्षेत्र में पानी के बिना मुरझाने के साथ दम तोड़ रही फसलों को नया जीवनदान मिला है। शहर में अमृत योजना के तहत सीवरेज कार्य चल रहे हैं। सीवरेज कार्य के तहत दर्जनों स्थानों पर सड़कों पर चैंबरस के लिए गड्डे खोद रखे हैं व निर्माण कार्य चल रहा है। रविवार को हुई तेज बारिश से गड्डे पानी से भर गए। अनेक गड्डों में सड़कों से पानी पहुंचता रहा। इन गड्डों के कारण हादसे की आशंका बनी रही। वहीं गंगासिंह चौक, मल्टीपरपज स्कूल और पुरानी शुगर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रणथम्भौर में बाघ टी-58 की मौत

सवाई माधोपुर, 7 जुलाई (निस)। रणथंभौर अभयारण्य से रविवार को बाघ, टी-58 की मौत की दुःखद खबर सामने आई।

कार्यवाहक डीवीजनल फॉरेस्ट ऑफिसर मानस सिंह ने बताया की बाघ टी-58, बाघिन 26 शमीली का बेटा है, जिसकी उम्र 13 साल थी। टाइगर टी-58 रविवार को शाम को

■ रविवार शाम 6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में मृत पाया गया। मौत के कारणों का पता सोमवार को पोस्टमार्टम के बाद ही चल पाएगा।

6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में मृत पाया गया। शव को राजबाग वन्य जीव मोचरी में रखवाया गया। जिसकी मौत के कारणों का सोमवार पोस्टमार्टम के बाद ही पता चल पाएगा। टाइगर की मौत बाघ संरक्षण एवं वन्य जीव प्रेमियों के लिए बड़ी दुःखद खबर है।



रणथम्भौर अभयारण्य में रविवार को बाघ टी-58 की मौत हो गई। रविवार शाम 6 बजे टाइगर हिंदवाड के पास फलोदी रेंज में टाइगर मृत पाया गया। बाघ टी-58, बाघिन 26 शमीली का बेटा है, जिसकी उम्र 13 साल थी।

राहुल आज मणिपुर व असम जाएंगे

नई दिल्ली, 7 जुलाई (वार्ता)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सोमवार को पूर्वोत्तर की यात्रा पर रहेंगे जहां वे असम के बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद मणिपुर के हिंसा पीड़ितों से भी मिलेंगे। कांग्रेस ने यह जानकारी देते हुए बताया कि गांधी सुबह असम के बाढ़

■ कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सोमवार को पूर्वोत्तर की यात्रा पर रहेंगे जहां वे असम के बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद मणिपुर के हिंसा पीड़ितों से भी मिलेंगे।

पीड़ित कछार जिले के थलाई राहत शिविर में जाएंगे और बाढ़ पीड़ितों से मुलाकात करेंगे।

उन्होंने बताया कि उसके बाद गांधी सीधे मणिपुर जाएंगे जहां वह जिरिविम हायर सेकेंडरी स्कूल, मोहरंग के फुबाला हाई स्कूल के साथ ही मंडप, तूबांग चुराचंदपुर में पीड़ितों के राहत शिविरों में लोगों से मिलेंगे। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस विधायक दल की बैठक काल

जयपुर, 7 जुलाई (का.प्र.)। कांग्रेस विधायक दल की बैठक 9 जुलाई को आयोजित होगी। राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन तथा बाप के नवनियुक्त

■ होटल मेरियेट (जवाहर सर्किल, जयपुर) में आयोजित समारोह में कांग्रेस सांसदों का सम्मान भी किया जायेगा।

सांसदों का स्वागत समारोह राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित किया जाएगा। सभी कार्यक्रम जयपुर में जवाहर सर्किल स्थित होटल मेरियेट में आयोजित होंगे।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं प्रवक्ता स्वर्णिम चतुर्वेदी ने बताया कि 9 जुलाई को जयपुर के (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी रेलगाड़ियों के लोको पायलट्स की "दुर्गति" के मुद्दे को संसद में उठायेंगे

राहुल गांधी ने दो दिन पहले लोको पायलट्स से मुलाकात की थी तब उन्होंने उन्हें अपनी दिक्कतें बताईं और कहा कि, उनका जीवन बहुत कठिन हो गया है। उनसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता है, छुट्टी नहीं दी जाती है और उन्हें पर्याप्त आराम नहीं मिलता जो रेल दुर्घटनाओं की भी एक वजह है

नई दिल्ली, 7 जुलाई (वार्ता)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि मोदी सरकार ने लोको पायलटों के जीवन की रेल को पटरी से उतार दिया है और उनके जीवन को बहुत कठिन बना दिया है इसलिए वह इस मुद्दे को संसद में उठाएंगे।

राहुल गांधी दो दिन पहले नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लोको पायलटों से मिले थे और उन्होंने लोको पायलट से मुलाकात की थी तब उन्होंने उन्हें अपनी दिक्कतें बताईं और कहा कि उनका जीवन बहुत कठिन हो गया है। उनसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता है, छुट्टी

■ राहुल गांधी के लोको पायलट से मुलाकात का वीडियो कांग्रेस ने रविवार को अपने एक्स हैंडल पर जारी किया जिसमें पायलट अपनी समस्या राहुल गांधी को बता रहे हैं। कांग्रेस नेता ने उनकी समस्याएं सुनने के बाद कहा कि मोदी सरकार में लोको पायलटों का जीवन बेहद मुश्किल हो चुका है।

■ उन्होंने कहा, गर्मी से खौलते केबिन में बैठ कर लोको पायलट 16-16 घंटे काम करने को मजबूर हैं। लगातार और बिना छुट्टी के काम करने की वजह से लोको पायलटों की शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं।

समस्या गांधी को बता रहे हैं। कांग्रेस नेता ने उनकी समस्याएं सुनने के बाद कहा कि मोदी सरकार में लोको पायलटों का जीवन बेहद मुश्किल हो चुका है।

कांग्रेस नेता ने कहा, लगातार और बिना

छुट्टी के काम करने की वजह से लोको पायलटों की शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। इंडिया समूह लोको पायलटों के अधिकारों और वर्किंग कंडीशंस को बेहतर किए जाने के लिए संसद तक आवाज उठाएगा। नरेंद्र मोदी की

सरकार में लोको पायलटों के जीवन की रेल पूरी तरह पटरी से उतर चुकी है। उन्होंने कहा, गर्मी से खौलते केबिन में बैठ कर लोको पायलट 16-16 घंटे काम करने को मजबूर हैं। जिनके भरोसे करोड़ों जिंदगियां चलती हैं उनकी अपनी जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं रह गया है। यूरिनल जैसी बेसिक सुविधाओं से भी वंचित लोको पायलट्स के न काम के घंटों की कोई लिमिट है और न ही उन्हें छुट्टी मिलती है जिसके कारण वह शारीरिक और मानसिक रूप से टूट कर बीमार हो रहे हैं। ऐसे हालात में लोको पायलटों से गाड़ी चलवाना उनकी और यात्रियों की जान को जोखिम में डालना है।